ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

देवो देवानमसि। ऋग्वेद 1/94/13
हे परमात्मन् ! तू देवों का देव है तू महादेव है।
O God ! you are the Lord of lords.

वर्ष 39, अंक 21 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 28 मार्च, 2016 से रविवार 3 अप्रैल, 2016
विक्रमी सम्वत् 2072 सृष्टि सम्वत् 1960853116
दयानन्दाब्द: 192 वार्षिक शुल्क: 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें- www.thearyasamaj.org/aryasandesh

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से भारतीय नववर्ष विक्रम सम्वत् 2073 का शुभारम्भ

भारतीय नववर्ष विक्रम सम्वत् का शुभारम्भ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से होता है। भारतीय परम्परा के अनुसार इस बार 08 अप्रैल 2016 को नव सम्वत्सर 2073 का मंगलमय दिन है। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का यह दिन सृष्टि संवत्, वैवस्वतादि मन्वन्तर, चारों युगादि, कृत संवत्, युधिष्ठिर संवत् आदि के आरम्भ के कारण भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण माना जाता है। ज्योतिष के प्रसिद्ध ग्रन्थ हिमाद्रि के अनुसार चैत्र शुक्ल पक्ष के प्रथम दिन सूर्योदय के समय ब्रह्मा ने जगत की रचना की थी। ब्रह्मपुराण में स्पष्टतया उल्लेख किया गया है।

''चैत्र मसि जगद् ब्रह्मा सरार्ज प्रथमेऽहीन।''

सृष्टि का प्रथम सूर्योदय चैत्र सुदि प्रतिपदा व मेष संक्रान्ति और काल के विभाग वर्ष, ऋतु, अयन, मास, पक्ष, दिन, नक्षत्र, मुहूर्त, लग्न और पल के साथ प्रारम्भ हुए। 'सिद्धान्त शिरोमणि ग्रन्थ में भी इसी आश्य का उल्लेख मिलता है- आदित्यवार में चैत्र मास शुक्ल पक्ष के आरम्भ में दिन, मास, वर्ष, युग एक साथ आरम्भ हुए। इसी कारण इस दिन के महत्त्व को देखते हुए भारतवर्ष में कई संवत् चौत्र प्रतिपदा से आरम्भ किए गए।'

विक्रम संवत् से पूर्व अनेक संवत् प्रचलन में रहे हैं जिनमें सप्तर्षि संवत्, कलियुग संवत, बुद्ध निर्वाण संवत्, वीर निर्वाण संवत्, मौर्य निर्वाण संवत् आदि उल्लेखनीय हैं। सप्तर्षि संवत्, वीर निर्वाण संवत का प्रचलन कश्मीर क्षेत्र में होता रहा है। ज्योतिष विद्वान की कल्पना के अनुसार आकाश में स्थित सप्तर्षि तारकापुंज की अपनी गति विद्यमान रहती है। समस्त नक्षत्र मंडल का भ्रमण पूर्ण करने के लिए उन्हें 2700 साल लगते हैं। इस कालावधि को 'सप्तर्षि चक्र' कहते हैं। सप्तर्षि काल एवं शक का निर्देश पौराणिक साहित्य में प्राप्त हेाता है। इस शक को 'शक काल' एवं लौकिक काल नामान्तर भी प्राप्त थे। कश्मीर के ज्योतिर्विदों के अनुसार कालिवर्ष 27 चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन इस शक का आरम्भ हुआ था। कश्मीर इस दिन को 'नवरह' के

...शेष पेज 3 पर

क्या बस इसलिए कि विधवा हिन्दू है?

पंकज नारंग की कहानी दूसरी है, अभी तक उनकी लाश में राजनीति और मीडिया को दिलचस्पी नहीं है, न ही उनकी विधवा पत्नी के आंसू इतने मायने रखते हैं जितने रोहित की माँ और अखलाक की पत्नी के मायने रखते थे। दिल्ली के मुख्यमंत्री, रोहित वेमुला की आत्महत्या पर हैदराबाद पहुँच गये थे। किन्तु दिल्ली का विकासपुरी कांड अभी उनसे दूर है। शायद यह मामला अल्पसंख्यक वोटों का भी हो सकता है? देहरादून में घोड़े की टांग टूटना मीडिया के लिए बहुत बड़ी खबर बन जाती है; घोड़ा मीडिया की मानवीय संवेदना जगा सकता है किन्तु एक मासूम बच्चे के सामने उसके बाप को 15-20 लोगों द्वारा पीट कर मारना संवेदना की एक लाइन नहीं बन पाती क्योंकि इस बार विधवा एक हिन्दू महिला है।

दिल्ली के विकासपुरी इलाके में मामूली कहासुनी के बाद एक डॉक्टर की पीट-पीट कर हत्या करने के आरोप में पुलिस ने पांच आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। अफसोस सभी मुस्लिम समुदाय से बताए जा रहे हैं शायद हत्यारों का मजहब तलाशने से कुछ लोगों को बुरा लगे पर क्या करें इस खबर पर चुप रहना राजनीति और मीडिया की मजबूरी हो सकती है किन्तु कलम की कोई मजबूरी नहीं है इस प्रसंग पर आगे बढ़ने से पहले एक बात कहना चाहेंगे कि वरिष्ठ पत्रकार पी. साईनाथ ने 19 मार्च को दिल्ली के राजेन्द्र भवन में शुरू हुए दो दिवसीय सम्मेलन "सिकुड़ता लोकतांत्रिक स्पेस और नव-उदारवादी कट्टरता'' पर पहला वक्तव्य देते हुए कहा कि मीडिया वह सेज है जहाँ मजहबी कट्टरता और बाजार की कट्टरता के आपसी सम्बन्ध हैं। करीब एक घंटे के अपने संबोधन में पी. साईनाथ ने बहुत सी बातें कहीं, लेकिन केवल पौने दस मिनट, जो मीडिया की भूमिका पर खर्च किये, वे किसी के लिए भी दवा की एक खुराक का काम कर सकते हैं खासकर उनके लिए जिसके दिमाग में पिछले कुछ महीने में मीडिया ने जहर भर दिया है।

हमें पी. साईनाथ की यह बात इसलिए अच्छी लगी कि उनकी यह बात दवा की तरह कड़वी जरुर है लेकिन समाज और सिस्टम के लिए फायदेमंद है। पिछले दिनों अखलाक की कुछ लोगों ने पीट-पीट कर हत्या कर दी थी। मसला गौमांस भक्षण को लेकर विवाद का था। हालाँकि यह प्रसंग मीडिया और राजनीति ने इतना चूसा कि बिहार विधान सभा चुनाव असहिष्णुता की भेंट चढ़ गया। लेखिका नयनतारा सहगल, अशोक बाजपेयी व फिल्म निर्माता निर्देशक, गायक कलाकार अपने अवार्ड पुरस्कार लौटाने तक चल दिए थे। समाजवादी सरकार में वर्तमान मंत्री आजम खान ने तो यूएनओ को चिट्ठी तक लिख डाली थी कि देखिये साहब भारत में मुस्लिमों को पीट पीट कर मारा जा रहा है। आनन् -फानन में दादरी राजनीति का गढ़ बन गया यहाँ तक कि ब्रिटेन पहुँचे प्रधानमंत्री मोदी को वहाँ प्रेस कांफ्रेंस में इस मामले पर सफाई देनी पड़ी। उत्तर प्रदेश सरकार

...शेष पेज 3 पर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में
14वें आर्य होली मंगल मिलन समारोह सम्पन्न
चित्रमय झांकी एवं विस्तृत समाचार
अगले अंक में

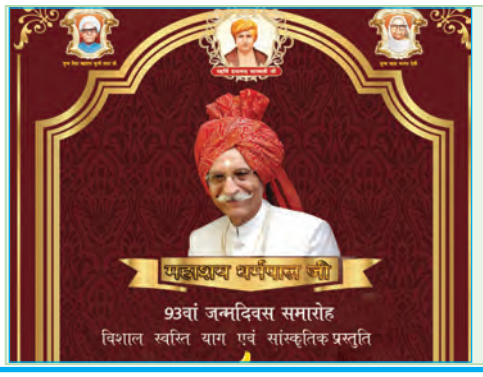

महाशय धर्मपाल (एम.डी. एच.) का 93वां जन्मोत्सव बड़े धूमधाम के साथ सम्पन्न। जन्मोत्सव की विस्तृत रिपोर्ट व चित्रमय झांकी अगले अंक में अवश्य देखें।

-सम्पादक

स्वाध्याय

हे मेरे आत्मन्! तू ब्रह्मद्वेषियों का संग मत कर

मा त्वा मूरा अविष्यवो मोपहस्वान आ दभन्। मार्कीं ब्रह्मद्विषो वनः।।
-ऋ. 8/45/23; साम. उ.1/2/7; अथर्व. 20/22/2
ऋषिः-त्रिशोकः कण्वः।। देवता-इन्द्रः।। छन्दः-गायत्री।।

विनय- हे मेरे आत्मन्! जब तू आत्मसुधार के लिए अग्रसर होता है, तो संसार की कई विरोधिनी शक्तियां तेरा मुकाबला करती हैं, तुझे आगे बढ़ने से रोकना चाहती हैं। जब तू अपनी उन्नति के लिए सुधार के मार्ग का अवलम्बन करेगा तो कई अज्ञानी मूढ़ भाई उसे न समझने के कारण तेरा विरोध करेंगे, तेरी निन्दा करेंगे। जिन भाइयों के स्वार्थ में उस सुधार द्वारा धक्का लगेगा या धक्का लगने का काल्पनिक भय होगा वे 'अविष्यु' (अपनी पालना चाहने वाले) स्वार्थ-पीड़ित पुरुष तेरे मार्ग में निःसन्देह रोड़े अटकाएंगे, चुगली करेंगे, भ्रम फैलाएंगे और तुझे नाना प्रकार के कष्ट देंगे, परन्तु हे मेरे आत्मन्! तू इनसे मत घबराना, मत दबना, मत नष्ट होना, तू अन्त में इन सबको अवश्य जीत लेगा। तेरा तेज अदम्य है। इसी तरह तेरे निराले कार्यों को देखकर-जिन्हें साधारण जनता ने अभी तक नहीं अपनाया है, ऐसे नये सुधार के कार्यों को तुझे आचरण में लाते देखकर-कुछ लोग तेरी खिल्ली उड़ाएंगे, तेरा उपहास करेंगे, हंसी-हंसी में बड़े तीक्ष्ण व्यंग्य करेंगे, पर हे मन! तू इनसे भी कभी हतोत्साह मत होना, इनसे प्रभावित मत होना अनुद्विग्र और प्रसन्न-चित्त से इन सबकी सह लेना। एक समय आएगा जब ये अज्ञानी मूढ़ पुरुष भी सच्चाई समझ जाएंगे और ये ठट्टा करने वाले लोग तेरे अनुयायी हो जाएंगे। यह ठट्टा उड़ाना तथा मूर्खों द्वारा पीड़ा पहुंचाया जाना इस संसार में सुधार के साथ, उन्नतिशीलता के साथ, सदा से होता आया है और होता रहेगा। कुतर्क, ठट्ठा, पीड़ा आदि कर्मों में से प्रत्येक सुधारशील आत्मा को गुजरना ही पड़ता है, अतः तू इन्हें अभी पूरी तरह सहन नहीं कर सकता तो अच्छा है कि तू 'ब्रह्मद्विष्' लोगों का-उन लोगों का जो ब्रह्म से (ज्ञान से या परमेश्वर) प्रीति नहीं रखते, जो तेरे मार्ग से विपरीत मार्ग को पकड़े हुए हैं उनका-सेवन मत कर, उनकी संगति में मत रह; उनकी उपेक्षा कर, उनसे यूं ही बात मत कर, बिना प्रयोजन उनके सम्पर्क में मत आ। ऐसा करने से तू अनावश्यक संघर्ष से बचेगा और तुझे अपने को दृढ़ करने का निर्बाध अवसर मिलेगा। दृढ़ हो जाने पर तो तू इन सबके मध्य में रहनेवाला गुरु हो जाएगा।

शब्दार्थ- (हे मेरे आत्मन्! हे मेरे मन!) त्वा-तुझे मूराः- मूढ़ अविष्यवः-अपनी पालना चाहने वाले स्वार्थ-पीड़ित लोग मा दभन्-मत नष्ट करें, मत दबा दें और अपहस्वानः- उपहास करने वाले, ठट्ठा उड़ाने वाले लोग भी मा-मत दबा दें। तू ब्रह्मद्विषः ज्ञान व परमेश्वर से प्रीति न रखने वाले मनुष्यों को मार्की वनः-मत सेवन कर, मत संगति कर।

साभार : वैदिक विनय

पुस्तक प्राप्ति के लिए वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

सम्पादकीय

आतंक में भी रंगभेद

सीरिया के विस्थापितों के लिए दया सवेदना दिखाना यूरोपीय समुदाय को कहीं महंगा तो नहीं पड़ रहा है? इतना महंगा कि जिसकी कीमत उन्हें अपने मासूम नागरिकों की जान से चुकानी पड़ रही है! फ्रांस के बाद अब यूरोपीय देश बेल्जियम की राजधानी ब्रसेल्स में हुए धमाके की गूंज में एक बार फिर मजहबी आतंक के खूनी खेल पर प्रश्नचिह्न खड़ा होना लाजिमी बात है। बेल्जियम की राजधानी ब्रसेल्स के एयरपोर्ट पर मंगलवार को दो फिदाईन धमाके हुए हैं। प्राप्त जानकारी के मुताबिक धमाकों में 35 लोगों की मौत हो गई जबकि सैंकड़ों लोग घायल हुए हैं। धमाके में जेट एयरवेज के दो कर्मचारी भी घायल हुए हैं। बेलगा एजेंसी अनुसार वहां हुई गोलीबारी में एक व्यक्ति की मौत और धमाके से पहले एक व्यक्ति अरबी भाषा में चिल्लाया था। लोग इसे भले ही यूरोप पर आतंकी हमला कह रहे हों किन्तु हम इसे उस दया संवेदना पर हमला कहेंगे जो यूरोपीय समुदाय ने एक नन्हे बच्चे ऐलन कुर्दी की लाश समुंद्र तट देखने के बाद सीरियाई शरणार्थियों पर दिखाई थी।

जब तक विश्व समुदाय यह सोचता है कि आतंकवाद से कैसे निपटा जाये तब तक आतंकवादी नये ठिकानों पर हमला कर अपनी मजहबी मंशा जगजाहिर कर देते हैं। हर एक आतंकी घटना के बाद अमेरिका की अगुवाई में आतंक से निपटने के संकल्प लिए जाते हैं। विश्व समुदाय के बड़े नेता आतंकी हमलों की निंदा करते हैं, बस बात खत्म; दो साल से अधिक समय बीत चुका है, बेगुनाह निर्दोष लोग मारे जा रहे हैं, सिगरेट के पैकेटों के बदले यौन शोषण के लिए यजीदी समुदाय की बच्चियां बेचीं जा रही हैं। करोड़ों लोग बेघर होकर ठोकर खा रहे हैं किन्तु समूचे विश्व के शक्तिशाली देशों के शीर्ष नेता यह तय नहीं कर पा रहे हैं कि मानवता को निगलने वाले काले सांप इस्लामिक स्टेट का फन कुचलना ज्यादा जरूरी है या सीरिया के राष्ट्रपति को अपदस्थ करना? पेरिस में हुए हमले जिसमें सैकड़ों लोग मारे गये थे, हमले के मास्टरमाइंड माने जा रहे फ्रांसीसी मूल के बेल्जियम नागरिक सलाह अब्देसलाम की गिरफ्तारी के चार दिन बाद जिस तरह बेल्जियम की राजधानी बम धमाकों से दहल उठी उसे देखकर लगता है कि यूरोप अभी आतंक से लड़ने के लिए पूर्णरूप से तैयार नहीं है।

भारत के मेघालय राज्य से कुछ ही बड़े बेल्जियम में लगभग 350 मस्जिदें हैं जिनमें से 80 अकेले ब्रसेल्स में हैं। उनके इमाम अधिकतर तुर्की या अरब देशों की सरकारों द्वारा प्रायोजित होते हैं। वे अपने प्रवचनों में क्या उपदेश देते हैं, कुरान की आयतों की क्या व्याख्या करते हैं, इसे देश का अधिकारी वर्ग नहीं जानता। संदेह यही है कि मुस्लिम युवा घर के बाहर धार्मिक कट्टरता का पहला पाठ मस्जिदों में ही पढ़ते हैं। दूसरा यदि आज आतंक के खिलाफ लड़ाई लड़ने वाले देशों को देखें तो यह भी एक मजाक सा लगता है। पाकिस्तान और सउदी अरब आतंक से लड़ने के लिए अमेरिकी मदद लेते है जबकि हकीकत सब जानते हैं कि आतंक का असली पोषण इन्ही देशों के द्वारा होता है।

तीसरा एक कड़वे सच को लोग खुलकर स्वीकार करने से हिचकते हैं कि आतंकवाद के विरुद्ध विश्वव्यापी अभियान में भी गोरे-काले का फर्क है। पश्चिम अफ्रीका में बोको हराम ने लगभग 17 हजार लोगों की हत्या कर दी, यह अमेरिका और उसके मित्रों के लिए आतंक का विषय नहीं बना। ऐसा क्यों है कि न्यूयार्क में 9/11 से लेकर, पेरिस के 13/11 तक आतंकी कार्रवाई के विरुद्ध दुनिया एकजुट होकर निंदा करती है और यदि ऐसा ही नृशंस हमला 2008 ताज होटल मुंबई लोकल ट्रेन में या 2016 में पठानकोट में होता है तो उसे भारत-पाकिस्तान के बीच आपसी तनातनी की नजर से देखा जाता है। आखिर ये दोगुला रवैया क्यों? अमेरिका को आतंकवाद के सफाये की इतनी ही फिक्र है, तो वह साझा ऑपरेशन करके लादेन की तरह दाऊद इब्राहिम को मार गिराने में भारत की मदद क्यों नहीं करता? इस समय पूरी दुनिया आतंक को लेकर सकते में है, अफसोस कि रूस के इस्लामिक स्टेट के खात्मे के अभियान को बशर अल असद को बचाने की कार्रवाई घोषित कर दिया जाता है। सिर्फ इसलिए कि आतंक के सफाये का श्रेय पुतिन न ले लें। आज अमेरिकी जिद के कारण लाखों लोग उजड़ रहे हैं। हजारों की सामूहिक कब्र बन रही है। मानवता रो रही है किन्तु अमेरिकी लोग यूरोप में भी खून से सनी जमीन को संवेदना की आड़ में लीपापोती कर रहे हैं। अब यूरोपीय समुदाय को खुद समझना होगा हम यह नहीं कहते कि धर्म विशेष के लोगों को नफरत की नजर से देखें किन्तु भेड़ियों पर यदि भेड़ें दया दिखाएँ तो क्या हासिल होगा सब जानते हैं।

-सम्पादक

प्रेरक प्रसंग

सामाजिक क्रांति कैसे आई?

कुछ लोग क्रांति का शोर तो बहुत मचाते हैं परन्तु कर कुछ भी नहीं पाते, परन्तु ऐसे भी धीर-वीर देखने में आते हैं जो कहते नहीं करके दिखा देते हैं। आज भी बहुत विरले युवक हैं जो विधुर होने पर किसी विधवा से विवाह करने को सहर्ष उद्यत हों। सन् 1914 ई. में तो यह कार्य और भी कठिन था। उत्तर प्रदेश में तब एक आर्यवीर ने एक विधवा से विवाह करके सारे उत्तरप्रदेश के पौराणिकों, विशेषरूप से कायस्थों में खलबली मचा दी। पंडित श्री गंगा प्रसाद जी उपाध्याय ने अपनी माता जी व अपनी पत्नी श्रीमती कलादेवी जी को बड़ी सूझबूझ से इस बात के लिए तैयार कर लिया कि उपाध्याय जी के अनुज का एक बालविधवा से विवाह किया जाए। विवाह की बात गुप्त रखी गई।

विचित्र बात तो इस विवाह में यह थी कि कन्या के माता-पिता को तैयार करने के लिए भी बड़ा परिश्रम करना पड़ा। तीस युवक बारात में गये। विवाह हो गया। पौराणिकों ने इसका कड़ा विरोध किया। सनातनी लोगों ने अपना रामबाण छोड़ा। उपाध्याय जी को बिरादरी से बहिष्कृत करने का प्रस्ताव पारित कर दिया गया।

पौराणिकों ने एक बहुत बड़ी सभा बुलाई। इतनी बड़ी सभा गंगाप्रसाद जी की बिरादरी ने न कभी देखी भी न सुनी थी। मुरादाबाद के पंडित ज्वाला प्रसाद तथा आर्य समाज के विरोधी कई नामी पंडितों को आर्य समाज के विरोध के लिए इस सभा में बुलाया गया। आर्य समाज ने कविरत्न पंडित अखिलानन्द तथा देशभक्त पंडित इन्द्रवर्माजी शास्त्रार्थमहारथी को शास्त्रार्थ के लिए बुलाया। अखिलानन्द तब तक वैदिक धर्मी ही था। आर्यों ने शास्त्रार्थ की खुली चुनौती दे दी। उक्त सभा एटा में बुलाई गई थी। उपाध्याय जी तो सभा में उपस्थित न थे परन्तु इनके हितैषियों ने इसमें सोत्साह भाग लिया। उपाध्याय जी के अनुज की एटा में क्या सारे उत्तरप्रदेश के पोंगापंथियों में धूम मची हुई थी। सभा के प्रधान एक राजा साहब राव महाराजसिंह मनोनीत किये गये। राजा साहब नियत समय पर न पहुंच सके। आर्यवीरों ने एक अचूक निशाना लगाया। एक युवक उठा और कहा, ''जब तक राजा साहब नहीं आते तब तक श्री अमूल्यरत्न जी प्रभाकर इस सभा के प्रधान बनाये जाएं।'' तुरंत ही एक दूसरे युवक ने इस प्रस्ताव का अनुमोदन कर दिया। एकदम श्रीयुत अमूल्यरत्न जी ने सभापति का आसन ग्रहण कर लिया।

इसके तुरन्त पश्चात् एक और युवक ने यह प्रस्ताव रख दिया कि कुलश्रेष्ठ कायस्थों की यह सभा सर्वसम्मति से यह निश्चय करती है कि श्री सत्यव्रत जी ने एक बालविधवा से विवाह करके वीरतापूर्ण कार्य किया है। उनको बधाई दी जाती है। यह सारा कार्य आठ-दस मिनटों में समाप्त हो गया। लोग घरों को जाने लगे और सभा के संचालकों में खलबली मच गई। अब क्या किया जाए? कुछ लोग राजा महोदय के पाय गये। कुछ एक ने पुलिस से सहायता मांगी। पुलिस इसमें करे भी तो क्या?

साभार-तड़पवाले

पुस्तक प्राप्ति के लिए वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

पृष्ठ 1 का शेष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा ...

रूप में मानते हैं। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के इस शुभदिन को नववर्ष के रूप में मनाना अत्यन्त वैज्ञानिक है। पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है। इस कारण सूर्य कभी भूमण्डल रेखा के उत्तर में तो कभी दक्षिण में विद्यमान रहता है। किन्तु वसन्त ऋतु के द्वितीय मास चौत्र शुक्ल प्रतिपदा को सूर्य भूमध्य रेखा पर होता है। सृष्टि का वातावरण समशीतोष्ण होता है। समशीतोष्ण के कारण वात, पित्त और कफ के दोष समान होते हैं। आयुर्वेद के अनुसार मानव के अस्वस्थ होने का सर्वप्रमुख कारण इन त्रिदोषों की विषमता ही है। अत: स्पष्ट है कि इस दिन पृथ्वी पर कहीं विषमता लक्षित नहीं होती इसीलिए हमारे अनुपम वैज्ञानिक पूर्वजों में संवत्सर पर सृष्टि में, हर्ष, उल्लास, उमंग का आना स्वाभाविक है। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को प्रकृति नवचेतना और स्फूर्ति से भरपूर होती है। वैसे भी यह दिन भारतीय संस्कृति में उत्सवों की श्रृंखला लेकर आता है। विक्रम किसी सम्प्रदाय विशेष का संवत् नहीं है, मातृभूमि को विदेशियों से मुक्त करने वाले वीर राजा विक्रमादित्य के नाम से प्रचलित यह संवत् सम्पूर्ण राष्ट्र की चेतना को अपने भीतर समेटता है।

इसी दिन शकारि विक्रमादित्य ने अपनी मातृभूमि को शत्रुओं के चंगुल से मुक्त करवा कर विजयोत्सव मनाया तथा राष्ट्रीय महत्त्व की स्थापना करते हुए एक संवत् का प्रचलन किया जिसे कालान्तर में 'विक्रम संवत्' के नाम से जाना जाने लगा। विक्रम संवत् बहुमान्य है और लगभग सम्पूर्ण भारत में विभिन्न समुदायों द्वारा अपने-अपने ढंग से मनाया जाता है। शताब्दियों से सिन्धी समुदाय चैत्र शुक्ल द्वितीया पर 'चेटीचंड महोत्सव' अत्यन्त उमंग एवं श्रद्धा से मनाता है। इस दिन भी झूलेलाल जी की जयन्ती मनाई जाती है। श्री झूलेलाल जी का जन्म विक्रम संवत् 1007 (सन् 651) में चैत्र शुक्ल द्वितीया को शुक्रवार के दिन हुआ था। श्री झूलेलाल जी को जलदेवता 'वरुण' का अवतार माना जाता है। सिन्धी समुदाय के इष्ट श्री झूलेलाल जी की स्मृति में आयोजित चेरी चण्ड महोत्सव से भारत की प्राचीन सिन्धु घाटी की सभ्यता की स्मृति हो जाती है। महाराष्ट्र की जनता विक्रम संवत् के प्रथम दिवस को गुड़ी पड़वा के नाम से आयोजित करती है। इस पर्व पर वहां के लोग सुन्दर वस्त्र धारण करके, स्वादिष्ट व्यंजनों का आदान-प्रदान करके परस्पर प्रेम की अभिव्यक्ति करते हैं। आन्ध्र प्रदेश के निवासी चौत्र शुक्ल प्रतिपदा को 'उगाडी' के रूप में मनाते हैं। यह हमारे वैज्ञानिक पूर्वजों के 'युगादि' शब्द का ही रूपान्तरण है। महर्षि वाल्मीकि ने 'रामायण' में श्री रामचन्द्र जी के राजतिलक के लिए इसी दिन का उल्लेख किया है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम के राज्याभिषेक के लिए विशिष्ट दिन का चुनाव निश्चित था। इसलिए चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से विशिष्ट संवत् और कोई दिन नहीं हो सकता था।

विक्रम संवत् को 'वरुण पुंज', 'चैत्री चंद', 'गुड़ी पड़वा' तथा 'उगाडी' महोत्सव के अतिरिक्त आर्य समाज स्थापना दिवस होने का श्रेय भी प्राप्त है। विक्रम संवत् की श्रेष्ठता, वैज्ञानिकता तथा पवित्रता को अनुभव करके ही युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सन् 1875 के इस शुभ दिन में आर्य समाज की स्थापना का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। आर्य समाज की स्थापना के माध्यम से महर्षि दयानन्द ने राष्ट्र में व्याप्त समस्त अन्धकार व अनाचार को मिटाने का संकल्प लिया था। आर्य समाज के दस नियम सम्पूर्ण समाज को समुचित दिशा देने में अग्रणी हैं। वैदिक संस्कृति के उन्नायक महर्षि दयानन्द के अनुयायी तथा आर्य समाज का विशाल जनसमुदाय नवसंवत्सर को अत्यन्त हर्षोल्लास से मनाता है। वे लोग इस दिन घर-घर में, छोटी बड़ी संस्थाओं में यज्ञ-हवन सम्पन्न करके वायुमंडल को सुरक्षित करते हैं। बाह्य पर्यावरण के अतिरिक्त वैदिक मन्त्रों के उच्चारण द्वारा मानसिक पर्यावरण को भी शुद्ध करके नए-नए संकल्प लिए जाते हैं।

अभिप्राय यह है कि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का यह दिन सदविचारों का संकल्प करने के लिए श्रेष्ठ माना जाता है। वस्तुत: केवल भारत में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व के अन्य देश आज भी किसी न किसी रूप में इस दिवस की महत्ता को समझते हैं। ईराक आदि देश सूर्य के भूमध्य रेखा पर आने से 'नौरोज' नामक पर्व मनाते हैं। यह पर्व लगभग बारह दिन तक चलता है।

पूर्व काल में बेबीलोन में यह त्यौहार बसंत ऋतु के बाद की अमावस को ग्यारह दिनों तक मनाए जाने की परम्परा रही है। ईरान में 21 मार्च के आसपास इस उत्सव को आयोजित किया जाता रहा है। बर्मा में 'तिजान' नाम से इस नववर्ष को तीन दिनों तक मनाया जाता रहा है। विश्व के प्रसिद्ध धर्मों में यहूदी मत का विशिष्ट स्थान है, येरुसलम में 'यहूदी पास्का' नामक उत्सव वसन्त की प्रथम पूर्णिमा के दिन अत्यन्त उत्साह से मनाते हैं। अब प्रश्न यह उठता है कि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को प्रारम्भ होने वाला नवसंवत्सर सारे विश्व में अपने गौरव को स्थापित कर चुका है तो हम भारतीय नववर्ष के पहले दिन के रूप में इसे क्यों नहीं मनाते? क्या कारण है कि आज भी भारत के अधिकांश लोग अंग्रेजों के नववर्ष पहली जनवरी को उन्मादित होकर मनाते हैं? माना कि हमारी संस्कृति अपने पराए का भेद नहीं करती, फिर भी पहली जनवरी और नवसंवत्सर में भेद हमें विवेक पूर्वक करना अपेक्षित है। भारत के संचार माध्यमों में पहली जनवरी को नववर्ष का स्वागत करने में होड़ सी मच जाती है। उस नववर्ष के लिए अनेक सांस्कृतिक और रंगारंग कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं जो हमारी परम्परा और संस्कृति के अनुरूप नहीं है किन्तु वेद, ब्राह्मण ग्रन्थ, पाणिनी कृत अष्टाध्यायी, ज्योतिष ग्रन्थ हिमाद्रि, भास्कराचार्य तथा सिद्धान्त शिरोमणि, सूर्य सिद्धान्त, मनुस्मृति तथा महर्षि दयानन्द कृत वेद भाष्य जिस चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन का गौरव स्थापित करते हैं। वह उपेक्षित अनजाना सा व्यतीत हो जाता है। संचार के मुद्रित माध्यम हिन्दी में प्रकाशित होने वाले दैनिक पत्र या पत्रिकाएं कभी थोड़ा बहुत स्मरण करके इस महत्त्वपूर्ण दिन के प्रति अपना दायित्व पूरा कर लेते हैं। अंग्रेजी पत्र पत्रिकाएं तो नवसंवत्सर का जनसंचार करने में प्राय: मौन ही रहती हैं। हमारी संस्कृति आशावादी है। हमें निराश नहीं होना है। आइए, जागें! नए प्रभात की कल्पना करें - इस बार करवट बदलने का संकल्प लें और नवसंवत्सर की गरिमा को पहचाने। पाश्चात्य रंग में रंगती हुई बाल किशोर और युवा पीढ़ी को अपनी संस्कृति और परम्परा का कल्याणकारी रंग प्रदान करें जिससे उसका मार्ग प्रशस्त हो सके। नव संवत्सर 2073 पूरे विश्व के लिए सुखद एवं मंगलमय हो। इसी कामना के साथ विक्रम संवत् का हार्दिक अभिनन्दन।

- डॉ. उमा शशि दुर्गा
पूर्व प्रो. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विवि

भारतीय नव संवत्सर विक्रमी, भारत के महान सम्राट महाराज विक्रमादित्य के राज्यभिषेक चौत्र शुक्ल प्रतिपदा को आर्य जाति विशेष पर्व के रूप में मनाती आ रही है। इस पर्व की महत्ता एवं उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए डॉ. श्रीमती उमा शशि दुर्गा जी द्वारा लिखित लेख नव संवत्सर के अवसर पर सब आर्यजनों विशेष कर नवयुवकों के संज्ञान हेतु प्रकाशित किया जा रहा है। *- सम्पादक*

पृष्ठ 1 का शेष क्या बस इसलिए ...

ने तत्काल संवेदना प्रकट करते हुए अखलाक की विधवा पत्नी को फ्लैट और नकद लाखों रुपये देने का आश्वासन दिया।

किन्तु पंकज नारंग की कहानी दूसरी है, अभी तक उनकी लाश में राजनीति और मीडिया को दिलचस्पी नहीं है, न ही उनकी विधवा पत्नी के आंसू इतने मायने रखते हैं जितने रोहित की माँ और अखलाक की पत्नी के मायने रखते थे। दिल्ली के मुख्यमंत्री, रोहित वेमुला की आत्महत्या पर हैदराबाद पहुँच गये थे। किन्तु दिल्ली का विकासपुरी कांड अभी उनसे दूर है। शायद यह मामला अल्पसंख्यक वोटों का भी हो सकता है? देहरादून में घोड़े की टांग टूटना मीडिया के लिए बहुत बड़ी खबर बन जाती है; घोडा मीडिया की मानवीय संवेदना जगा सकता है किन्तु एक मासूम बच्चे के सामने उसके बाप को 15-20 लोगों द्वारा पीट कर मारना संवेदना की एक लाइन नहीं बन पाती क्योंकि इस बार विधवा एक हिन्दू महिला है। यदि डॉक्टर की पत्नी अल्पसंख्यक समुदाय या दलित समाज से होती तो शायद अब तक वह हो जाता जो अभी हम कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। हत्यारों में चार आरोपी नाबालिग हैं, जिन्हें हिरासत में लिया गया है। आमिर नाम के दो, नासिर, मयसर, गोपाल और मसिरा नाम की महिलाएं भी हैं। सबके सब हत्यारे पास ही स्थित झुग्गियों में रहने वाले बताए जा रहे हैं। हो सकता है कल जब वे बाल सुधार ग्रह से वापस आयें तब तक जाति और मजहब की राजनीति इतनी मजबूत हो चुकी हो कि उनके सम्मान पर पलक पांवड़े बिछाये जायें?

क्या डॉ. पंकज नारंग की पत्नी को मीडियाई और राजनैतिक लिहाज से मैं बदकिस्मत भी कह सकता हूं? कि अब तक राज्य के मुख्यमंत्री आम आदमी पार्टी के संयोजक केजरीवाल को उनके आंसू दिखाई नहीं दिए जो अखलाक की विधवा बीवी को 15 लाख का चेक सौप आये थे। हो सकता है ये मुख्यमंत्रियों की ये बंदिशे हों कि वे तभी किसी मृतक के घर जाएं जब वो दलित या अल्पसंख्यक रहा हो या सांप्रदायिक हिंसा में मारा गया मुसलमान हो? मैं यह नहीं चाहता की इस मुद्दे पर भी धर्म की राजनीति हो पर प्रश्न उन मजहबी मानसिक रोगी राजनीति करने वालों पर है, उन लेखकों पर है, उन कलाकारों पर है जो लाश सूंघ कर रोते हैं। दादरी मामले पर आमिर खान से लेकर शाहरुख खान तक बयानबाजी करते नजर आये थे, किन्तु इस घटना की निन्दा तक करने में किसी को कोई रुचि दिखाई नहीं दी, क्या बस इसलिए की विधवा हिन्दू है? **-राजीव चौधरी**

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36=16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36=16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30=8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

दैनिक यज्ञ कार्यक्रम में सैकड़ों महानुभावों ने उत्साहपूर्वक लिया भाग

आर्य समाज कीर्ति नगर के तत्त्वावधान में 25 मार्च 2016 को प्रभात फेरी, वैदिक यज्ञ, भजन, आध्यात्मिक प्रवचन कार्यक्रम में लगभग 300 प्रेमी सदस्यों ने भाग लेकर धर्म लाभ प्राप्त किया।

बैसाखी के अवसर पर चतुर्वेद सतकम्

बैसाखी के अवसर पर चतुर्वेद सतकम् स्त्री आर्य समाज मालवीय नगर 7-9 अप्रैल 2016 तक बैशाखी के अवसर पर चतुर्वेद सतकम् का आयोजन कर रहा है। मुख्यातिथि डा. योगानन्द शास्त्री होंगे। **-सत्यभूषण आर्य**

आर्य प्रतिनिधि सभा फर्रुखाबाद के तत्त्वावधान में चरित्र-निर्माण शिविर सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा फर्रुखाबाद के तत्त्वावधान में 22 जन. से 23 फरवरी 2016 के मध्य चरित्र निर्माण शिविर मेला रामनगरिया पांचाल घाट में सम्पन्न हुआ। शिविर में आचार्य विष्णु मित्र वेदार्थी के सानिध्य में पुरोहित प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। आर्य वीर दल के अधिष्ठाता संदीप आर्य ने युवाओं को आत्मरक्षा एवं चरित्र निर्माण का प्रशिक्षण दिया। -संदीप आर्य

ओ३म् है परमपिता का नाम, भजलो प्यारे ओ३म् का नाम

ओ३म् है परमपिता का नाम, भजलो प्यारे ओ३म् का नाम।
चाहे सुबह हो चाहे शाम, भजलो प्यारे ओ३म् का नाम ।।
ओ३म् है परमपिता का नाम, भजलो प्यारे ओ३म् का नाम।
ओ३म् है वेदों का वरदान, ओ३म् का नाद है ब्रह्म समान ।।
ओ३म् है जीवन ओ३म् है प्राण, ओ३म् में रहते स्वयं भगवान् ।
ओ३म् को सुमरो आठो याम, भजलो प्यारे ओ३म् का नाम।।
ओ३म् है परमपिता का नाम, भजलो प्यारे ओ३म् का नाम ।
ओ३म् की ध्वनि है अति पावन ओ३म् का मंत्र है मन भावन।।
ओ३म् की ध्वनि है अति पावन ओ३म् का मंत्र है मन भावन ।
ओ३म् का अक्षर है अनुपम, ये श्रुति का शब्द प्रथम।।
ओ३म् का अक्षर है अनुपम, ये श्रुति का शब्द प्रथम।
इसपे निछावर शब्द कमान, भजलो प्यारे ओ३म् का नाम।।
ओ३म् है परमपिता का नाम, भजलो प्यारे ओ३म् का नाम।
ओ३म् कहो ओमकार कहो, शब्द ये बारम्बार कहो।
ओ३म् कहो ओमकार कहो, शब्द ये बारम्बार कहो।।
ओ३म की महिमा अपरम्पार, ओ३म् करेगा बेड़ा पार।
ओ३म की महिमा अपरम्पार, ओ३म् करेगा बेड़ा पार।।
जीतोगे जीवन संग्राम, भजलो प्यारे ओ३म् का नाम।
ओ३म् है परमपिता का नाम, भजलो प्यारे ओ३म् का नाम ।।
ओ३म् है परमपिता का नाम, भजलो प्यारे ओ३म् का नाम।
मनुष्य जन्म पाने वालो जीवन धन्य बना डालो।।
मनुष्य जन्म पाने वालो जीवन धन्य बना डालो।
इत उत नाहक मत दौड़ो, ओ३म् से निज नाता जोड़ो।।
इत उत नाहक मत दौड़ो, ओ३म् से निज नाता जोड़ो।
निश्चय होगा शुभ परिणाम, भजलो प्यारे ओ३म् का नाम।।
ओ३म् है परमपिता का नाम, भजलो प्यारे ओ३म् का नाम।
ओ३म का नाम है प्रभु का नाम, ओ३म है परमानन्द का धाम।।
ओ३म् का सुमरण है अनमोल, ऋषि मुनियों ने देखा तोल।
ओ३म है चंचल चित की लगाम, भजलो प्यारे ओ३म् का नाम।।
ओ३म् है परमपिता का नाम, भजलो प्यारे ओ३म् का नाम।
ओ३म् भजो ओ३म् भजो ओ३म् भजो ओ३म्, सब कोई बोलो ओ३म् भाई ओ३म्।।
ओ३म् है परमपिता का नाम, भजलो प्यारे ओ३म् का नाम।।

कविः- प्रदीप,
-श्री राम चन्द्र आर्य द्वारा अनुवादित

"भारत माता की जय" और जय ही रहेगी

भारत देश में इन दिनों विवादों की एक लू सी चल रही है जिसकी चपेट में देश की राजनीति मीडिया, नेता और अभिनेता आ गये और देश की रक्षा करने वाले जवान, अन्न पैदा करता किसान, देश का गरीब, मजदूर, व्यापारी मूक होकर देख रहा है। अभी पिछले दिनों ओवैसी ने अपने एक बयान में कहा कि यदि कोई मेरी गर्दन पर चाकू भी रख दे तब भी मैं भारत माता की जय नहीं कहूँगा। हालाँकि उनके इस बयान की उदार और बुद्धिजीवी मुस्लिम जगत ने काफी आलोचना की। जावेद अख्तर ने तो उन्हें गली मोहहले का नेता तक बता डाला और तीन बार ऊँचे स्वर में भारत माता की जय का संसद के सदन के उद्घोष कर कट्टरपंथी मुस्लिमों को करारा जवाब दिया। किन्तु इसके बाद भी यह विवाद थमता दिखाई नहीं दे रहा है। हैदराबाद के एक इस्लामिक आॅर्गनाइजेशन जामिया-निजामिया ने भारत माता की जय बोलने के खिलाफ फतवा जारी किया है। ऑर्गनाइजेशन के मुताबिक, इस्लाम मुस्लिमों को इस नारे की इजाजत नहीं देता। इंसान ही इंसान को जन्म देता है, धरती नहीं दारुल उलूम इफ्ता और इस्लामिक फतवा सेंटर के मुफ्ती अजीमुद्दीन ने कहा, "कुदरत के कानून के मुताबिक एक इंसान ही इंसान को जन्म दे सकता है।" उन्होंने आगे कहा, लैंड ऑफ इण्डिया भारत को मां कहना ठीक नहीं है। एक इंसान की मां एक इंसान ही हो सकती है, किसी धरती का कोई टुकड़ा नहीं।"

फतवे का जिक्र करते हुए मुफ्ती ने कहा, इस्लामिक रूल्स के मुताबिक हम भारत की धरती को भारत माता नहीं कह सकते। मौलवी जी के अनुसार इन्सान का जन्म बायोलॉजी पर आधरित है। सही बात है कि आप लोगों ने विज्ञान को स्वीकार तो किया जब यह स्वीकार किया तो क्या यह स्वीकार कर सकते हैं कि किताबें आसमानों से नहीं उतरती? 'अल आरा' 'पृथ्वी गोल है, आसमान सात नहीं होते? यदि इन्सान को इन्सान जन्म देता है तो खुदा ने मिट्टी से आदम को कैसे बनाया?

फतवे का जिक्र करते हुए मुफ्ती ने कहा, इस्लामिक रूल्स के मुताबिक हम भारत की धरती को भारत माता नहीं कह सकते। मौलवी जी के अनुसार इन्सान का जन्म बायोलॉजी पर आधारित है। सही बात है कि आप लोगों ने विज्ञान को स्वीकार तो किया जब यह स्वीकार किया तो क्या यह स्वीकार कर सकते हैं कि किताबें आसमानों से नहीं उतरती? 'अल आरा' 'पृथ्वी गोल है, आसमान सात नहीं होते? यदि इन्सान को इन्सान जन्म देता है तो खुदा ने मिट्टी से आदम को कैसे बनाया? बहरहाल बहुत सारे विवादित प्रश्न निकलकर आयेंगे। हम सबके लिए यह देश हमारी मातृभूमि है, माँ है, इसलिए हम 'भारत माता की जय' बोलते हैं। दरअसल ओवेसी को 'भारत माता की जय से कोई समस्या नहीं है। देश से भी उन्हें कोई समस्या नहीं है। हिन्दुओं से भी उन्हें कोई समस्या नहीं है। वास्तव में ओवैसी की समस्या ये है कि वे महज एक व्यक्ति नहीं बल्कि 'विचारधारा' हैं। यह 'विचारधारा' घोर साम्प्रदायिक है और यह सिर्फ ओवैसी की ही नहीं है, बल्कि यह विचारधारा सिमी की भी है। यह विचारधारा हरकत-उल अंसार की भी है ,यह कश्मीर में दुख्ताराने हिन्द की भी है। कश्मीर में पत्थरबाजी करने वालों की भी है, केरल में मुस्लिमलीग की है। आंध्र, तेलांगना में आईएम और ओवैसी की है। वही विचारधारा कभी सैयद शाहबुद्दीन की भी रही है। ऐ आर अंतुले, गनीखान चौधरी, इमाम बुखारी, आजम खाँ ने इस विचारधारा का जमकर भोग किया है। ममता, मुलायम, लालू और नीतीश ने भी इसका स्वाद चखा है। देश विभाजन के बाद-पाकिस्तान बन जाने के बाद इस विचार धारा से ही पाकिस्तान बना था। लेकिन भारत को अपना वतन मानने वाले जावेद अख्तर, निदा फाजली, अमजद अली खान जैसे करोड़ों मुसलमानों को जब कुछ स्वार्थी लोग 'दारुल हरब' का ज्ञान बाँटने की जुर्रत करते हैं तो उन्हें औकात बता दी जाती है। जैसेकि जावेद अख्तर ने राज्य सभा में ओवैसी के नकारात्मक बयान पर उसे आइना ही नहीं दिखाया बल्कि जावेद अख्तर ने ओवैसी को गली मोहल्ले का नेता बताकर उसकी असल औकात दिखा दी है।

जापान के बारे में एक कथा प्रचलित है कि जापान के स्कूलों में बच्चों को तीन प्रश्नोत्तर पढ़ाये जाते हैं। पहला प्रश्न यह है कि आप सबसे ज्यादा किसे मानते हैं, उत्तर- भगवान बुद्ध को, दूसरा प्रश्न-अगर कोई भगवान बुद्ध पर हमला कर दे तो आप क्या करेंगे! उत्तर- हमला करने वाले का सिर उड़ा देंगे तीसरा प्रश्न अगर भगवान बुद्ध ही जापान पर हमला कर दे तो क्या करोगे उत्तर हम भगवान बुद्ध का ही सिर उड़ा देंगे, अर्थात् जापान देश में सिखाया जाता है कि देश, धर्म से भी बढ़कर है और कोई भी धर्म और भगवान देश से बड़ा नहीं होता। अगर भगवान भी देशद्रोह करने को बोले तो भी मत करो और हमारे यहाँ भारत माता की जय बोलने से लोगों का धर्म खतरे में पड़ रहा है और हंगामा हो रहा है।

-राजीव आर्य

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेतृत्व में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में

आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेतृत्व में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन ए ब्लॉक जनकपुरी, नई दिल्ली में दिनांक 3 जुलाई 2016 को होना निश्चित हुआ है। आर्य परिवारों से अनुरोध है कि अपने विवाह योग्य पुत्र-पुत्रियों के आर्य परिवारों से संबंध जोड़ने के लिए परिचय सम्मेलन में शीघ्र-अतिशीघ्र पंजीकरण कराने का कष्ट करें।

पंजीकरण शुल्क मात्र 300 रुपये,

पंजीकरण फॉर्म सभा की वैबसाईट **www.thearyasamaj.org**

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

श्री अर्जुन देव चड्ढा, राष्ट्रीय संयोजक, मो. 9414187428

श्री एस.पी. सिंह, दिल्ली संयोजक, मो. 9540040324

दयानन्द मठ दीनानगर, पंजाब में वेद प्रचार यात्रा का आयोजन

दयानन्द मठ दीनानगर, पंजाब 1-13 अप्रैल 2016 तक ग्रामीण क्षेत्र में वेद प्रचार यात्रा, सामवेद यज्ञ एवं आर्य महासम्मेलन आयोजित किया जा रहा है।

बैशाखी के अवसर पर चतुर्वेद सतकम् का आयोजन

बैशाखी के अवसर पर चतुर्वेद शतकम् स्त्री आर्य समाज मालवीय नगर 7-9 अप्रैल 2016 तक बैशाखी के अवसर पर चतुर्वेद शतकम् का आयोजन कर रहा है। मुख्यातिथि डा. योगानन्द शास्त्री होंगे। **-सत्यभूषण आर्य**

12 घंटे 365 दिन चलने वाले अग्निहोत्र का शुभारंभ

वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड़ परिसर में 20 मार्च 2016 प्रात: 9 बजे अखंडित अर्थात दिन भर (सूर्योदय से सूर्यास्त तक) सतत चलने वाले अग्नि होत्र का शुभारंभ व बहुमाली यज्ञ कुंड में प्रथम बार अग्न्याधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल द्वारा किया गया।

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का शिविर जम्मू में

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का वार्षिक राष्ट्रीय शिविर 5 से 12 जून 2016 तक जम्मू में लगाया जाएगा जिसमें 14 वर्ष से अधिक आयु की वह वीरांगनाएं जिन्होंने पहले भी कम से कम 2 शिविरों में भाग लिया हो, आ सकती हैं। 15 मई तक अपने नाम रजिस्टर कराएं। -साध्वी उत्तमायति, मो. 9672268683, 9810702760

आर्य केन्द्रीय सभा सोनीपत द्वारा ऋषि बोध दिवस सम्पन्न

आर्य केन्द्रीय सभा सोनीपत के तत्वावधान में 7 मार्च 2016 को ऋषि दयानन्द बोध दिवस (शिव रात्रि पर्व) के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में वैदिक प्रवक्ता पंडित सत्यवीर वेदालंकार सोनीपत, आर्य भजनोपदेशक पंडित प्रदीप जी, गुलशन जी फरीदाबाद ने उपस्थित जनसमूह का मार्ग दर्शन किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता स्वामी सत्यवेश (पूर्व नाम जयसिंह दहिया) ने की। मुख्यातिथि राजीव जैन ने उपस्थित होकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। **-महामंत्री**

आर्य समाज रोहताश नगर का 50वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज रोहताश नगर, शिवाजी पार्क, शाहदरा, दिल्ली का 50वां वार्षिकोत्सव 14 से 17 अप्रैल 2016 तक आयोजित किया जा रहा है। कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रात: जागरण यात्रा एवं आर्य महिला सम्मेलन होंगे। अध्यक्षता श्री धर्मपाल आर्य, प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं मुख्यातिथि महाशय धर्मपाल जी (एम. डी.एच. चेयरमैन), प्रवचन: डॉ साध्वी उत्तमायति एवं सु.श्री अंजलि आर्या।

-महामंत्री, सुखबीर सिंह त्यागी

आकर्षक वैदिक शगुन लिफाफे

नये डिजाइनों में उपलब्ध

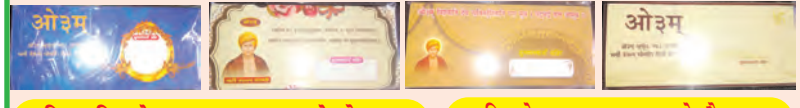

बिना सिक्के वाला 300/- रुपये सैकड़ा

सिक्के वाला 500/- रुपये सैकड़ा

प्राप्ति स्थान:

वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड, नई दिल्ली -110001

मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें

1 अप्रैल जन्म दिवस पर विशेष

अपने प्राणों की परवाह न करते हुए हिंदुओं को धर्म परिवर्तन से रोका व शुद्धि अभियान के प्रणेता बने पंडित लेखराम आर्य

लेखराम का जन्म 8 चैत्र, संवत् 1995(1858ई.) को झेलम जिला के तहसील चकवाल के सैदपुर गाँव (अब पाकिस्तान में) में हुआ था। उनके पूर्वज महाराजा रणजीत सिंह की फौज में थे। उनके पिता का नाम तारा सिंह एवं माता का नाम भाग भरी था।

बचपन से ही स्वाभिमानी और दृढ़ विचारों के थे। पंडित लेखराम जी ने आरम्भ में उर्दू-फारसी पढ़ी। एक बार उनको पाठशाला में प्यास लगी, मौलवी से घर जाकर पानी पीने की इजाजत मांगी। मौलवी ने झूठे मटके से पानी पीने को कहां। उसने न दोबारा मौलवी से घर जाने की इजाजत मांगी और न ही झूठा पानी पिया। सारा दिन प्यासा ही बिता दिया। पंडित जी को पढ़ने का बहुत शौक था। मुंशी कन्हैयालाल अलाखधारी की पुस्तकों से उनको स्वामी दयानंद सरस्वती का पता चला। लेखराम जी ने ऋषि दयानंद के सभी ग्रंथों का स्वाध्याय आरम्भ कर दिया।

सत्रह वर्ष की उम्र में वे सन् 1875ई, में पेशावर पुलिस में भरती हुए और उन्नति करके सारजेंट बन गए। इन दिनों इन पर 'गीता' का बड़ा प्रभाव था। दयानंद सरस्वती से प्रभावित होकर उन्होंने संवत् 1937 विक्रमी में पेशावर में आर्यसमाज की स्थापना की। 17 मई सन् 1880 को उन्होंने अजमेर में स्वामी जी से भेंट की। शंकासमाधान के परिणामस्वरूप वे उनके अनन्य भक्त बन गए।

लेखराम जी ने सन् 1884 में पुलिस की नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। अब उनका सारा समय वैदिक धर्मप्रचार में लगने लगा। कादियाँ के अहमदियों ने हिंदू धर्म के विरुद्ध कई पुस्तकें लिखी थीं। लेखराम जी ने उनका जोरदार खण्डन किया।

स्वामी दयानंद का जीवनचरित् लिखने के उद्देश्य से उनके जीवन संबंधी घटनाएँ इकट्ठी करने के सिलसिले में उन्हें भारत के बहुसंख्यक स्थानों का दौरा करना पड़ा। इस कारण उनका नाम 'आर्य मुसाफिर' पड़ गया। पं० लेखराम हिंदुओं को मुसलमान होने से बचाते थे। एक कट्टर मुसलमान ने 3 मार्च सन् 1897 को ईद के दिन, शद्धि कराने के बहाने, धोखे से लाहौर में उनकी हत्या कर डाली।

पंडित जी की तर्क शक्ति गजब थी। आपसे एक बार किसी ने प्रश्न किया कि हिन्दू इतनी बड़ी संख्या में मुस्लमान कैसे हो गए जिसके उत्तर में आपने सात कारण बताये-

1. मुस्लमान आक्रमण में बलात् पूर्वक मुसलमान बनाया गया।
2. मुसलमानी राज में जर, जोरू व जमीन देकर कई प्रतिष्ठित हिन्दुओं को मुस्लमान बनाया गया।
3. इस्लामी काल में उर्दू, फारसी की शिक्षा एवं संस्कृत की दुर्गति के कारण बने।
4. हिन्दुओं में पुनर्विवाह न होने के कारण व सती प्रथा पर रोक लगने के बाद हिन्दू औरतों ने मुस्लमान के घर की शोभा बढ़ाई तथा अगर किसी हिन्दू युवक का मुस्लमान स्त्री से सम्बन्ध हुआ तो उसे जाति से निकल कर मुसलमान बना दिया गया।
5. मूर्तिपूजा की कुरीति के कारण कई हिन्दू विधर्मी बने।
6. मुसलमानी वेश्यायों ने कई हिन्दुओं को फंसा कर मुस्लमान बना दिया।
7. वैदिक धर्म का प्रचार न होने के कारण मुस्लमान बने।

अगर गहराई से सोचा जाये तो पण्डित जी ने हिन्दुओं की जाति रक्षा के लिए उपाय बता दिए हैं, अगर अब भी हिन्दू नहीं सुधरे तो कब सुधरेंगे।

पण्डित लेखराम ने 33 पुस्तकों की रचना की। उनकी सभी कृतियों को एकीकृत रूप में कुलयात-ए-आर्य मुसाफिर नाम से प्रकाशित किया गया है।

पंडित लेखराम आर्य (1858-1897), आर्य समाज के प्रमुख कार्यकर्त्ता एवं प्रचारक थे। उन्होंने अपना सारा जीवन आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में लगा दिया। वे अहमदिया मुस्लिम समुदाय के नेता मिर्जा गुलाम अहमद से शास्त्रार्थ एवं उसके दुष्प्रचारों के खण्डन के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं। उनका संदेश था कि तहरीर (लेखन) और तकरीर (शास्त्रार्थ) का काम बंद नहीं होना चाहिए। पंडित लेखराम इतिहास की उन महान हस्तियों में शामिल हैं जिन्होंने धर्म की बलिवेदी पर प्राण न्योछावर कर दिए। जीवन के अंतिम क्षण तक आप वैदिक धर्म की रक्षा में लगे रहे। पंडित लेखराम ने अपने प्राणों की परवाह न करते हुए हिंदुओं को धर्म परिवर्तन से रोका व शुद्धि अभियान के प्रणेता बने।

Continue from last issue

Glimpses of the Atharva Veda

-Priyavrata Das

Indulgers in violence hurt themselves.

"Who-so-ever has used instruments of violence has never succeeded. He has got his feet and fingers injured. Thus he has caused good to us and harm for himself," says the verse.

What is the idea of saying that a malevolent person causing hurt to others gets his feet and fingers injured? This amply indicates that a vilolent person loses the effectivensss of his organs of execution by which he has bodily injured others. Man is a doer of just actions. That is why he has been endowed with five efficient organs for execution. Quite often, the Vedas have exhorted upon man to be mindful of the organs of body, the divine ones, which he has been blessed with to carry on a glorious life.

Greatness of a virtuous person lies in his doing good to those who do harm to him. To do good to the benefactor is a normal work. Even a crow fills the stomach with its beak, but one's life worthy on whom many others depend to live.

As you sow, so you reap. As a calf reaches its mother from amongst a thousand cows, so the deed, which was performed, follows the door. The Lord says, 'Whenever a fool gets furious, he is never released from fetters of wretchedness.'

यश्चकार न शशाक कर्तु शश्रे पादमंगरिम्।

चकार भद्रमस्मभ्यमात्मने तपनं तु सः।। (Av.iv. 18.6)

Yascakara na sasaka kartum sasre padamangurim.

cakar bhadramasmabhyamatmane tapanam tu sah..

Evil comes back to the evil-doer.

"Evil is born out of earth, but spreads out, it reaches upto the sky. Certainly it reverts from there. It turns back and falls on the very doer."

Sin is born in mind where sprout both the moral and immoral thoughts. When anevil thought is carried out by organs of the body, it is a crime. Sin is invisible, crime is visible and therefore it spreads. A criminal becomes dreadful in his surrounding. His wealth and power torment others. He is considered as irresistible. But himself he is suspicious and anxious. Fear and uncertainty make a firm hole on him. Outwardly he remains a terror. The verse says that evil, ultimately, turns back and falls on the evil-doer. Just as gravitational power of earth brings down a piece of stone thrown up in the sky, the law of truth discloses a criminal's activities. His fort of might is crushed. Coming in company of a man of virtues, he reforms himself, otherwise he repeats his crimes.

असुद्म्याः समभवत्तद्यामेति महद् व्यचः।

तद्वै ततो विधूपायत्प्रत्यक्कर्तारमृच्छतृ।। (Av. iv, 19-6)

Asadbhumyah samabha

battadyameti mahad vyacah.

tatbai tato bidhupayatpratyak kartaramrchhatu..

Benevolence begets humility.

"The wind blows downward; downwards shines the sun; downward the cow is milked; my your dealings bend with humility."

Ego is the cause of all sins. Egoistic perception is self conceit. The craving to benefit one's ownself alone brings the downfall of the crazy person. Self-advertisement is disgusting. On the other hand, projecting a modest opinion of oneself carries instant friendship and reverence.

The donor wind blows downwards in every corner. It does not demand anything in excange of its life-giving support. The sun distributes heat and light shining downwards. It burns itself to keep the earth alive. The milch cow is quiet while yielding milk. She consumes merely dry grass to give nectar like milk on which we live. A benevolent person by nature is modest. It is ignorance that turns him to be proud and arrogant.

O Lord, you lend all support even to an insect who does not know how to praise you. you never restrict comforts to an ungrateful devilish person who finds fault with your benevolent Creation. May you bless us to be humble in our life.

न्यग्वातो वाति न्यक्तपति सूर्यः

नीचीनमघ्न्या दुहे न्यग्भवतु ते रपः ।। (Av.VI.91.2)

Nyagvato vati nyaktapati suryah.

To Be Continue...

पुस्तक समीक्षा

गागर में सागर! दयानन्द सागर

पुस्तक का नाम : दयानन्द सागर
लेखक : भगवान दास,
मूल्य : 200/-
पृष्ठ सं. : 427
प्रकाशक : आर्य समाज नांगल राय, नई दिल्ली-46

महाकाव्य का अर्थ है- महत (महान) काव्य। वाल्मीकि रामायण के आधार पर महाकाव्य उसे माना जाता है जो आकार में विशाल हो, जिसमें किसी महापुरुष अथवा महात्मा की प्रतिष्ठा की गई हो और उसका रचयिता कोई श्रेष्ठ मुनि हो, बाद में संस्कृत और हिन्दी आचार्यों ने महाकाव्य को परिभाषित करते हुए स्थापित किया कि महाकाव्य में कोई न कोई महान उद्देश्य होना चाहिए, उसमें किसी महान घटना का वर्णन होना चाहिए साथ ही बाह्यलक्षण के रूप में उसमें कथात्मकता और छन्दोबद्धता हो और सर्गबद्धता, जीवन के विविध पक्ष और समग्र रूप का चित्रण हो तथा उसमें शैली की गंभीरता, उदात्तता और मनोहारिता के गुण होने चाहिए।

इस दृष्टि से शान्त तितिक्षदन्तिश्च जितेन्द्रिय दाता दयालु नम्रश्च आर्यः गुणों से सम्पन्न आचार्य भगवानदास विरचित 'दयानन्द सागर' महाकाव्य की कसौटी पर खरा उतरता है। कुल 427 पृष्ठों में समाहित और चार सर्गों (अध्यायों) तथा 242 शीर्षकों में विभक्त यह महाकाव्य महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन चरित को समग्र के साथ उद्घाटित करने में सफल रहा है। इस महाकाव्य में तत्कालीन राष्ट्रीय, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक व राजनैतिक परिस्थितियों का यथातथ्य चित्रण भी किया गया है। महाकवि आचार्य भगवान दास ने ऋषिवर दयानन्द जी के जीवन के उन प्रसंगों को सफलतापूर्वक उद्घाटित किया है जिनके द्वारा समस्त भारतीय समाज में एक नवीन क्रांति का सूत्रपात हुआ। उनके सत्प्रयासों से ही भारतवर्ष में बिना किसी जाति, वर्ण, वर्ग, धर्म, प्रान्त और लिंग के भेदभाव के शिक्षा के द्वार सभी के लिए खुल गए। अंधविश्वासों, कुरीतियों, ढोंग- ढकोसलों के कलंक से मुक्ति मिली।

विधवानारी-शूद्रों के सब बन्धन कटवाएं। संस्कृत-संस्कृति विद्यालय उनके हित खुलवाए।।

छुआछूत-पाखंड-भूत के ढाये भवन धड़ाम। ऋषिवर तुम्हें प्रणाम।।

इस प्रणामांजलि से इस महाकाव्य का शुभारम्भ किया गया है। महाकाव्य में कुल चार सर्ग हैं, वैराग्य काण्ड, गंगा काण्ड, संगठन काण्ड और राजस्थान काण्ड। इसमें वैराग्य काण्ड में 18, गंगा काण्ड में 76, संगठन काण्ड में 106 और राजस्थान काण्ड में 42 शीर्षकान्तर्गत महाकाव्य की कथा को वर्णित किया गया है। पुस्तक खोलते ही पाठक को गायत्री मंत्र के दर्शन होते हैं।

कविवर आचार्य भगवानदास ने ऋषि दयानन्दजी के जीवन के सूक्ष्मातिसूक्ष्म प्रसंगों को इस महाकाव्य में समाहित किया है जो प्रायः सामान्य जीवन चरितो में नहीं मिलते हैं। इससे स्पष्ट है कि रचयिता ने गंभीर और विशद अध्ययन व अनुशीलन इस क्षेत्र में किया है। तभी इतना विशद और व्यापक वर्णन सम्भव हो पाया है। इस महाकाव्य में जहां एक ओर ऋषिवर का व्यक्तित्व एवं जीवन चरित्र व्याख्यायित हुआ है वहीं उनकी वाणी और उनके उपदेशो को भी बखूबी स्थान दिया गया है-

है चिन्ता लक्ष मनुज मुक्ती, है मेरा जीवन उन कारण। हो जाय मुक्ति उन सबकी ही, चाहे जन्म अनेकों हों धारण।।

मिट जायं त्रास सब दीनों के वे परमपिता के सुत सारे, मेरी मुक्ती हो जाय स्वतः जब पायं मुक्ति जन साधारण।। (पृष्ठ 169)

लेखक ने अपने महाकाच्य में ऋषिवर के जीवन के अनूठे प्रसंगों को यथावत स्थान दिया है। स्वामी जी के उपदेश से प्रेरित होकर अनेक भारतीय धार्मिक पाखंडों से मुक्त होने लगे थे। कवि के शब्दों में -हूं उनके मत से सहमत मैं, वेदों में नहीं मूर्ति-पूजन। हैं तिलक-कण्ठि सब मन-कल्पित, मत-पथ स्वार्थ के हैं साधन।। व्रत-तीर्थ,पुराण-गरुण मिथ्या, गायत्री जपें वर्ण तीनों, मैं बदल गया, अब नहीं करूं, मन्दिर में प्रतिमा का अर्चन।। (पृष्ठ 59)

इस महाकाव्य में महर्षि दयानन्द के सभी शास्त्रार्थ तथा वेद प्रचारक, समाज सुधारक सभी विषयों और प्रसंगों का सुष्टु और निर्मल चित्रण किया है। ऋषि दयानन्दजी ने आर्य समाज, गोकृष्यादि रक्षिणी सभा तथा परोपकारिणी सभा का गठन किया था। इन सभी कार्यो और प्रयासों का चित्रण भी इस महाकाव्य की अन्यतम विशेषता है। ऋषिवर ने शिक्षा के प्रचार-प्रसार की बात की, सामाजिक व्यवस्था की और धार्मिक व आर्थिक विषयों पर भी अपना विवेचन किया। इस प्रकार उनकी दृष्टि से कोई भी विषय नहीं छूटा। उन्होंने अपने अनुयायियों को तर्क की कसौटी पर प्रत्येक बात को तोल कर ग्रहण करने का सिद्धान्त दिया। सभी विषय इस महाकाव्य में विशद रूप से वर्णित हुए हैं। महर्षि के जीवन पर केन्द्रित पहले भी अनेक काव्य लिखे गये हैं जिनका उल्लेख कविवर ने शुरू के पृष्ठों में ही देकर अपनी उदारता और सदाशयता प्रकट की है। वरना प्रायः सभी रचनाकार अपनी कृति को ही मौलिक और अभिनव बताते हैं। यह महाकाव्य इसलिए भी अनूठा और विशिष्ठ है कि इसे लोक मानस की ग्राह्य सहज सुबोध भाषा में और प्रवाहमय गेय शैली में आचार्य भगवान दास ने प्रस्तुत कर श्रेयस्कर कार्य किया है। उनका यह श्रम समाजहित में सार्थक और सार्थक है।

-डॉ हरि सिंह पाल, पूर्व उपनिदेशक, आकाशवाणी, दिल्ली दिल्ली
मो. 9810981398

यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, 15 हनुमान रोड नई दिल्ली-01 में उपलब्ध है जो महानुभाव इस पुस्तक को प्राप्त करना चाहें तो मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की दृष्टि में आर्यसमाज स्थापना का उद्देश्य

उन्नीसवीं शताब्दी के सर्वाधिक प्रगतिशील जन आन्दोलन के अन्तर्गत आर्यसमाज की स्थापना की गयी। आइए, देखें आर्य समाज स्थापना के पीछे महर्षि दयानन्दजी की क्या भावनाएँ निहित थीं और क्या उद्देश्य लेकर महर्षि जी ने इसकी स्थापना की थी-

लोगों को इस तथ्य का ज्ञान नहीं होगा कि आर्य समाज की स्थापना के वर्तमान दस नियम वे नहीं जो आर्य समाज की स्थापना के समय बनाए गये थे। उस समय अर्थात् सन् 1875 ई0 में आर्य समाज के दस नहीं 28 नियम थे। इन 28 नियमों में इसके उद्देश्यात्मक और संगठनात्मक सभी नियम सम्मिलित थे।

आर्य समाज स्थापना का उद्देश्य- आज जब कि आर्य समाज को स्थापित हुए 141 वर्ष व्यतीत हो रहे हैं, यह कैसे पता चले कि आर्य समाज की स्थापना किस उद्देश्य को लेकर की गई थी? संस्थाओं, समाजों, संगठनों तथा जन आन्दोलनों का इतिहास इसी दृष्टि से सुरक्षित रखा जाता है कि भावी पीढ़ी उस इतिहास के माध्यम से अपने अतीत को देखकर उससे कुछ प्रेरणा प्राप्त कर सकें। समाज के इतिहास से उसके उद्देश्यों का भी पता लगाया जा सकता है। आर्य समाज का उद्देश्य जानने के लिए हमारे पास दो साधन हैं - प्रथम है वह घोषणा पत्र जो इसकी स्थापना के बाद इसके पंजीकरण हेतु पंजीकर्त्ता रजिस्ट्रार को दिया गया था और दूसरा साधन है वे नियम जो इसकी स्थापना के समय निर्धारित किए गए थे। रजिस्ट्रार को जो घोषणा पत्र दिया गया था, उसमें आर्य समाज की स्थापना का उद्देश्य संसार में सत्य सनातन वेद-विद्या का प्रचार तथा प्रसार करना बताया गया था। उसके अनुसार संसार में वेदों का प्रचार करना आर्य समाज का उद्देश्य था क्योंकि संगठित और व्यवस्थित रूप से वेदों के प्रचार के लिए व्यवस्थित संगठन की आवश्यकता तीव्रता से महसूस की गई थी, इसीलिए आर्य समाज का गठन किया गया।

आर्य समाज स्थापना के उद्देश्य को जानने का दूसरा साधन है, उसके नियम और उप नियम। आर्य समाज के उप नियमों को देखने से ज्ञात होता है कि आर्य समाज के उद्देश्य उसके नियमों में वर्णित हैं। उप नियमों की शब्दावली देखें-''इस समाज के उद्देश्य वही हैं जो इसके नियमों में वर्णित हैं।'' अत: आर्य समाज के उद्देश्यों की खोज हमें आर्य समाज के नियमों से करनी होगी। अनेक लोगों को इस तथ्य का ज्ञान नहीं होगा कि आर्य समाज की स्थापना के वर्तमान दस नियम वे नहीं जो आर्य समाज की स्थापना के समय बनाए गये थे। उस समय अर्थात् सन् 1875 ई0 में आर्य समाज के दस नहीं 28 नियम थे। इन 28 नियमों में इसके उद्देश्यात्मक और संगठनात्मक सभी नियम सम्मिलित थे। सर्वप्रथम इन नियमों को देखते हैं, उसके पश्चात् वर्तमान नियमों की चर्चा करेगें। इन 28 नियमों में से जो सबसे पहला नियम है, उसमें आर्य समाज के उद्देश्य का स्पष्ट उल्लेख है। इस नियम की शब्दावली इस प्रकार है- ''सब मनुष्यों के हितार्थ आर्यसमाज का होना आवश्यक है।'' सन्दर्भ- आर्यसमाज का इतिहास, प्रथम भाग, पृष्ठ 325, पं0 इन्द्र विद्यावाचस्पति, इस नियम की शब्दावली बता रही है कि आर्य समाज का उद्देश्य मनुष्य मात्र का हित करना है। आर्यों, हिन्दुओं अथवा भारतवासियों तक इसका हित करने का लक्ष्य सीमित नहीं है अपितु सम्पूर्ण मानव-जाति का हित करने का उद्देश्य व लक्ष्य है। आर्य समाज का यह उद्देश्य किसी वर्ग विशेष, जाति विशेष, सम्प्रदाय विशेष अथवा देश या काल विशेष तक सीमित नहीं। यह पूर्णत: सर्वजनीय एवं सर्वदेशीय है। अत: आर्यसमाज की स्थापना के पीछे मूल भावना मनुष्यमात्र का हित साधन है।

विश्व भर के मनुष्यों का हित चाहने वाली अति कल्याणकारी यह संस्था भी अपने सर्वहितकारी उद्देश्य के कारण विश्व-संस्था का स्थान पाने की पूर्ण हकदार हैं। पं0 इन्द्रजी विद्यावाचस्पति के अनुसार- ''यह विस्तृत उद्देश्य है जिससे आर्य समाज की स्थापना हुई। संसार में इससे बढ़कर व्यापक उद्देश्य और नहीं हो सकता।'' (आर्य समाज का इतिहास प्रथम भाग, पृष्ठ 92) वस्तुत: इससे पहले इतने व्यापक और विशाल उद्देश्य के बारे में कोई सोच तक नहीं सकता था। किन्तु इसके संस्थापक की तो बात ही निराली है। वे इतने महान् तथा व्यापक उद्देश्य से भी संतुष्ट नहीं थे। ज्ञातव्य है कि ये 28 नियम मुम्बई के आर्य जनों ने बनाए थे, महर्षि के बनाए नहीं थे। महर्षि, आर्यजनों द्वारा बनाए गए इतने व्यापक और महान नियमों से संतुष्ट क्यों नहीं हुए, यह विचारणीय है। मनुष्य, मनुष्य मात्रा का हित साधे, यह छोटी बात नहीं। कविवर मैथिलीशरण गुप्त तो मनुष्य उसी को मानते हैं जो मनुष्य के हित प्राण तक न्यौछावर कर दे। यथा-

यही पशु प्रवृत्ति है कि आप, आप ही चरे। वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

आर्य समाज के संस्थापक देव दयानन्द का चिन्तन इससे आगे तक जाता है। मनुष्य का यह हित साधन मनुष्य तक ही सीमित क्यों रहे, प्राणीमात्र तक क्यों न जाएं? प्राणीमात्र ही नहीं, महर्षि तो जड़-चेतन सभी का हित चाहने वाले थे। वे तो''आत्मवत् सर्वभूतेषु'' की भावना से प्रभावित थे। तभी तो उन्होंने लिखा था कि ''मनुष्य उसी को कहना जो मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख-दु:ख और हानि-लाभ को समझें।'' अत: 24 जून 1877 को आर्य समाज, लाहौर की स्थापना के अनन्तर वर्तमान दस नियमों में आर्य समाज के मुख्य उद्देश्य को बदल दिया। अब संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य हो गया। यद्यपि मुम्बई वाले नियम भी कोई संकुचित और संकीर्ण नहीं थे, पर लाहौर वाले वर्तमान नियम और भी उदार और व्यापक उद्देश्य लिए हुए हैं। छठे नियम में इसके उद्देश्य को स्पष्ट किया गया है, जो इस प्रकार है- ''संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।''

मुम्बई में रजिस्ट्रार को दिये घोषणा पत्र वाले उद्देश्य अर्थात् संसार में वेद का प्रचार करना, जो इसको परम धर्म का रूप देकर तीसरे नियम में प्रकट कर दिया। यथा-''वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है'' वेद का प्रचार पढ़ाने और सुनाने से ही तो होगा, पर पढ़ा और सुना वही सकता है जो प्रथम स्वयं पढ़े और सुनेगा। इसलिए वेद के पढने-पढ़ाने और सुनने-सुनाने को परम धर्म घोषित कर दिया। जहाँ तक संसार के उपकार की बात है, संसार को वेदमार्ग पर आरूढ़ करने से बढ़कर भी संसार का उपकार हो सकता है, यह बात सोची भी नहीं जा सकती। संसार का उपकार यही है कि उसे सीधे-सच्चे निष्कन्टक वेदमार्ग का पथिक बना दिया जाये, तभी आर्य समाज का उद्देश्य पूर्ण होगा। आर्य समाज के उद्देश्य और भी हैं, पर संक्षेप में इतना ही।

- यशपाल आर्य 'बन्धु',
मुरादाबाद-32

बोध कथा

दिन दश के व्यवहार में झूठे रंग न भूल

विदुर एक दिन महाराजा धृतराष्ट्र के पास गये। धृतराष्ट्र बोले-''यह क्या हो गया है दुनिया को?''

विदुर ने कहा- ''राजन्!'' मोह के वशीभूत होकर मनुष्य लोभ, क्रोध और भय से पागल हुआ जाता है, चिन्ता की आग में जला जाता है। जब तक वह लोभ, क्रोध और भय से मुक्ति नहीं पायेगा, चिन्ता की अग्नि समाप्त नहीं होगी।''

एक कहानी सुनाई विदुर जी ने- ''एक था घना जंगल। उसमें कितने ही विषैले और भयंकर जीव-जन्तु चिल्लाते फिरते थे-सिंह और हाथी, सर्प और अजगर, चीते और रीछ। महान् अन्धकार था उसके अन्दर। भागता हुआ एक व्यक्ति उसके निकट आया। एक बहुत बड़े शरीर वाली भयानक स्त्री को उसने वहां देखा। वहां पांच विषैले सर्प देखे। वह भय के कारण भागा और कांपता-हांफता जंगल में दौड़ता चला गया। अंधेरे में एक तालाब में गिरा। परन्तु इससे पूर्व कि तालाब की उस तह में पहुंचता, जहां पानी नहीं था, किनारे पर लगे एक वृक्ष की शाखा उसके हाथ में आ गई। उससे लटक गया वह। जब कुछ होश आया तो उसने देखा कि नीचे गहरे तालाब की तह में एक भयानक सांप फन फैलाये बैठा है। उसकी आंखें अंगारों की भांति चमक रही हैं। ऊपर देखा कि एक छ: मुख वाला हाथी उस वृक्ष को गिराने का प्रयत्न कर रहा है जिसकी शाखा से वह चिपटा हुआ था और यह भी देखा कि श्वेत और काले रंग के चूहे वृक्ष की शाखा को काट रहे थे। ऊपर मृत्यु, नीचे मृत्यु। भय से उसका रोम-रोम कांप उठा, परन्तु तभी वृक्ष की एक अन्य शाखा पर लगे शहद के छत्ते से बूंद-बूंद करके शहद चूने लगा और उसके होंठों पर गिरने लगा। उसने शहद को चखा। उसके स्वाद में खो गया। भूल गया नीचे सर्प को, छ: मुख वाले उस हाथी को जो ऊपर चिंघाड़ता था, उन श्वेत और काले चूहों को जो शाखा को काट रहे थे, उस जंगल में चिल्लाते हुए सिंहों को, फुंकारते हुए अजगरों को, शोर मचाते हुए पशुओं को। उस व्यक्ति की भांति है युद्ध मनुष्य। शाखा से लटका हुआ, शहद के स्वाद में सब-कुछ भूला हुआ है।''

धृतराष्ट्र ने कहा- ''यह जंगल क्या है? वह स्त्री क्या है, जिससे डरकर वह भागा?''

विदुर ने कहा-''संसार वह भयानक जंगल है। इसमें रोग, शोक, अग्नि, भूकम्प, बाढ़ और लड़ाई-झगड़े के पशु घूमते रहते हैं। इसमें काम, क्रोध, लोभ मोह और अहंकार के सर्प रेंगते हैं। इसमें वह भयानक स्त्री हैं, जिसे बुढ़ापा कहते हैं। मनुष्य जीवन की जिस शाखा से चिपटा है, उसे दिन और रात्रि के श्वेत और काले चूहे काट रहे हैं। स्वयं शाखा को भी छ: ऋतुओं वाला वर्ष हाथी बनकर धक्के मार रहा है। नीचे भयानक सर्प के रूप में मृत्यु प्रतीक्षा कर रही है। इन सबको भूलकर यह अभागा मनुष्य आशा और निराशा के शहद की मिठास में खो गया। नीचे की मृत्यु और ऊपर का महानाश उसे दृष्टिगोचर नहीं होते।''

कबीरा यह संसार है, जैसा सेमल फूल।
दिन दश के व्यवहार में, झूठे रंग न भूल।।

साभार : बोध कथाएं

पुस्तक प्राप्ति के लिए वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

28 मार्च 2016 से 3 अप्रैल, 2016

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 31 मार्च 2016/ 1 अप्रैल, 2016

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0 (सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 30 मार्च, 2016

अपने बच्चों को उनके जन्मदिन पर दें
ऐतिहासिक जानकारी से भरपूर चित्रकथाएं

मूल्य प्रति कॉमिक्स 30/-

प्रतिष्ठा में,

आर्य समाज त्रिनगर का 142वां स्थापना दिवस

आर्य समाज त्रिनगर का 142वां स्थापना दिवस एवं नव सम्वत्सर 2073 के शुभावसर पर 9 अप्रैल 2016 को श्री विनय आर्य महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नेतृत्व में प्रभार फेरी महर्षि दयानन्द पार्क कन्हैया नगर त्रिनगर दिल्ली से आरंभ होगी। उद्बोधन श्री धर्मपाल आर्य प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं यज्ञ ब्रह्मा आचार्य योगेन्द्र शास्त्री जी होंगे।

नव सम्वत्सर उत्सव का आयोजन

आर्य समाज राजनगर पार्ट-2, पालम कॉलोनी, 9-10 अप्रैल 2016 को नव सम्वत्सर उत्सव आयोजित कर रहा है। जिसके अन्तर्गत यज्ञ ब्रह्मा डॉ. धर्मेंद्र कुमार शास्त्री, आचार्य ओम प्रकाश सामवेदी (हॉलैंड) व आचार्य सुनीता शास्त्री व धर्मपाल आर्य भजनोपदेशक होंगे। **-रतन आर्य, मंत्री मो. 9212148673**

विशेष सूचना

घर-घर यज्ञ हर घर यज्ञ

योजना संबंधी विशेष सूचना

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित घर-घर यज्ञ हर घर यज्ञ योजना प्रारंभ हुए एक वर्ष पूर्ण हो रहा है। जिन महानुभावों ने इस योजना के अन्तर्गत यज्ञ करवाए हैं। वे अपने यज्ञमानों की सूची नाम, पता और मोबाईल नम्बर सहित तत्काल भिजवाने की कृपा करें। सबसे अधिक यज्ञ करवाने वाले आर्य महानुभावों/पुरोहितों को सभा की ओर से सम्मानित किया जा सके। ये सूची आप ईमेल **aryasabha@yahoo.com** पर भेजें या 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 के पते पर भेज देंवे।

आर्य संदेश इंटरनेट पर पढ़े :
www.thearyasamaj.org/article

फेसबुक पर हमसे जुड़ें :
margdrashan@gmail.com

हवन-यज्ञ के लिए सर्वोत्तम प्रदूषण मुक्त
गाय के गोबर से तैयार समिधा
मात्र 25/- पैकेट (टिक्की व समिधा आकार में उपलब्ध)

प्राप्ति स्थान

वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली-110001 एवं सम्पर्क करें : मो. 09540040339

साप्ताहिक आर्य सन्देश में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धांतिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2 नारायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, फोन:23360150, 23365959, E-mail: aryasabha@yahoo.com; Web: www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक: धर्मपाल आर्य सह सम्पादक: विनय आर्य व्यवस्थापक: शिव कुमार मदान सह व्यवस्थापक: आर्य डॉ. ओम प्रकाश भटनागर, एस.पी. सिंह